Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed
Multidisciplinary Journal
Volume 4 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

विन्ध्यन कगार प्रदेश में पारिस्थितिकी पर्यटन संसाधनों का मूल्यांकन :

एक भौगोलिक अध्ययन

Evaluation of Ecotourism Resources in Vindhyan Escarpment Region: A Geographical Study

शोध–निर्देशक

डॉ. बी.पी. सिंह

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (भूगोल विभाग)

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह स्वशासी महाविद्यालय, रीवा, जिला–रीवा (म.प्र.)

शोधार्थी

निवेदिता सिंह

शोध छात्रा, भूगोल

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह स्वशासी महाविद्यालय, रीवा

सारांश (Abstract)

विन्ध्यन कगार प्रदेश मध्य भारत का एक भौगोलिक दृष्टि से विशिष्ट एवं पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यन्त संवेदनशील क्षेत्र है। सिंगरौली, शहडोल, अनूपपुर, उमरिया, सीधी, रीवा, मैहर, मऊगंज, सतना, पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़, दतिया जिलों में विस्तृत यह प्रदेश अपने वन्यजीव, जलप्रपात, वन सम्पदा, जैव विविधता, ऐतिहासिक धरोहर एवं जनजातीय संस्कृति के कारण पारिस्थितिकी पर्यटन के लिए असीमित सम्भावनाएँ रखता है। प्रस्तुत शोध पत्र में इस प्रदेश के पारिस्थितिकी पर्यटन संसाधनों का मूल्यांकन भौगोलिक दृष्टिकोण से किया गया है। शोध में प्राथमिक सर्वेक्षण, क्षेत्र-भ्रमण, साक्षात्कार एवं द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर संसाधनों की गुणवत्ता, सुलभता, धारण क्षमता एवं विकास की स्थिति का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इस प्रदेश में पर्यटन संसाधनों की प्रचुरता के बावजूद उनका समुचित मूल्यांकन एवं विकास नहीं हो सका है। उचित नीतिगत हस्तक्षेप एवं समुदाय-सहभागिता से इस प्रदेश को भारत के प्रमुख पारिस्थितिकी पर्यटन गंतव्यों में स्थापित किया जा सकता है।

मुख्य शब्द: विन्ध्यन कगार प्रदेश, पारिस्थितिकी पर्यटन, संसाधन मूल्यांकन, जैव विविधता, वन्यजीव, जनजातीय संस्कृति, धारण क्षमता, सतत् विकास, भौगोलिक अध्ययन।

1. प्रस्तावना

पारिस्थितिकी पर्यटन (Ecotourism) आज के युग में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं सतत् आर्थिक विकास का सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम माना जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय पारिस्थितिकी पर्यटन समिति (TIES) के अनुसार पारिस्थितिकी पर्यटन प्राकृतिक क्षेत्रों की ओर होने वाली वह उत्तरदायी यात्रा है जो पर्यावरण का संरक्षण करती है तथा स्थानीय लोगों की भलाई को बढ़ावा देती है। पारिस्थितिकी पर्यटन संसाधनों के मूल्यांकन का अर्थ है — किसी भी पर्यटन क्षेत्र में उपलब्ध प्राकृतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं मानवीय संसाधनों की गुणवत्ता, मात्रा, सुलभता एवं धारण क्षमता का वैज्ञानिक विश्लेषण।

विन्ध्यन कगार प्रदेश (Vindhyan Escarpment Region) मध्य प्रदेश के उत्तरी एवं उत्तर-पूर्वी भागों में विस्तृत है। यह प्रदेश विन्ध्याचल पर्वत श्रृंखला की कगारी भू-आकृतियों, गहरी नदी-घाटियों, घने वन क्षेत्रों, अनेक जलप्रपातों

एवं समृद्ध जैव विविधता के लिए प्रसिद्ध है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह क्षेत्र अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ प्रागैतिहासिक शैलचित्र, बौद्धकालीन स्तूप, हिन्दू-जैन मन्दिर, मध्यकालीन किले एवं महल विद्यमान हैं।

इस प्रदेश में बाँधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान, पन्ना राष्ट्रीय उद्यान, संजय-डुबरी राष्ट्रीय उद्यान, केन घड़ियाल अभयारण्य एवं अनेक वन्यजीव क्षेत्र स्थित हैं। रीवा के विश्वप्रसिद्ध केवटी एवं चचाई जलप्रपात, खजुराहो का विश्व धरोहर मन्दिर-समूह, चित्रकूट का धार्मिक एवं प्राकृतिक परिवेश इस क्षेत्र को पर्यटन की दृष्टि से विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण बनाते हैं। इसके अतिरिक्त, बैगा, गोंड, कोल एवं पनिका जनजातियों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत भी इस प्रदेश की एक विशिष्ट पहचान है।

इन सब विशेषताओं के उपरान्त भी विन्ध्यन कगार प्रदेश के पारिस्थितिकी पर्यटन संसाधनों का व्यापक एवं वैज्ञानिक मूल्यांकन अभी तक नहीं हो सका है। यही इस शोध पत्र की मूल प्रेरणा है। प्रस्तुत शोध पत्र इस प्रदेश के पारिस्थितिकी पर्यटन संसाधनों का समग्र एवं भौगोलिक दृष्टिकोण से मूल्यांकन करने का प्रयास करता है।

2. शोध पत्र के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं:

1. विन्ध्यन कगार प्रदेश के पारिस्थितिकी पर्यटन संसाधनों की पहचान एवं वर्गीकरण करना।
2. प्राकृतिक, सांस्कृतिक एवं मानवीय संसाधनों की गुणवत्ता एवं उपलब्धता का भौगोलिक विश्लेषण करना।
3. प्रमुख पर्यटन स्थलों की धारण क्षमता (Carrying Capacity) एवं पर्यटन भार का आकलन करना।
4. पारिस्थितिकी पर्यटन संसाधनों के विकास में आने वाली बाधाओं एवं सीमाओं का विवेचन करना।
5. संसाधनों के मूल्यांकन के आधार पर सतत् पर्यटन विकास के लिए नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

3. शोध का महत्व

प्रस्तुत शोध का महत्व बहुआयामी है। यह शोध विन्ध्यन कगार प्रदेश के पारिस्थितिकी पर्यटन संसाधनों का प्रथम व्यापक एवं भौगोलिक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है, जो इस क्षेत्र के पर्यटन नियोजन के लिए वैज्ञानिक आधार

तैयार करता है। यह शोध नीति-निर्माताओं, पर्यटन विभाग, वन विभाग एवं स्थानीय प्रशासन को ऐसी तथ्यात्मक जानकारी प्रदान करता है जिसके आधार पर इस क्षेत्र में पर्यटन के सुनियोजित विकास की योजनाएँ बनाई जा सकती हैं।

इस शोध का सामाजिक महत्व यह है कि यह जनजातीय समुदायों की भागीदारी को पर्यटन विकास का केन्द्र मानता है, जिससे इन समुदायों के आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त होता है। पर्यावरणीय दृष्टि से यह शोध धारण क्षमता के आकलन द्वारा संसाधनों के अतिशय दोहन को रोकने के उपाय सुझाता है।

अकादमिक दृष्टि से यह शोध पर्यटन भूगोल, पर्यावरण विज्ञान एवं जनजाति अध्ययन के छात्रों-शोधार्थियों के लिए संदर्भ सामग्री का कार्य करेगा। क्षेत्रीय विकास की दृष्टि से इस शोध के निष्कर्ष बाघेलखण्ड क्षेत्र के पिछड़े जिलों में पर्यटन आधारित रोज़गार सृजन की नींव रख सकते हैं।

4. विन्ध्यन कगार प्रदेश में पारिस्थितिकी पर्यटन संसाधनों का मूल्यांकन

4.1 प्राकृतिक संसाधनों का मूल्यांकन

4.1.1 वन्यजीव संसाधन

विन्ध्यन कगार प्रदेश के वन्यजीव संसाधन इस क्षेत्र की सबसे बड़ी पारिस्थितिकी पर्यटन सम्पदा हैं। इनका मूल्यांकन निम्नांकित तालिका में प्रस्तुत किया गया है:

तालिका 1: विन्ध्यन कगार प्रदेश के प्रमुख संरक्षित वन्यजीव क्षेत्र

संरक्षित क्षेत्र	जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	प्रमुख वन्यजीव	पर्यटन श्रेणी
बाँधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान	उमरिया	1,536	बाघ, तेंदुआ, गौर, चीतल	उच्च
पन्ना राष्ट्रीय उद्यान	पन्ना-छतरपुर	542	बाघ, घड़ियाल, भालू	उच्च
संजय-डुबरी रा. उद्यान	सीधी-शहडोल	1,674	हाथी, बाघ, तेंदुआ	मध्यम

केन घड़ियाल अभयारण्य	पन्ना-छतरपुर	45	घड़ियाल, मगरमच्छ, डॉल्फिन	मध्यम
बाणसागर पक्षी अभयारण्य	शहडोल	16.52	प्रवासी एवं स्थानीय पक्षी	मध्यम

बाँधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान देश में बाघों की सर्वाधिक घनत्व वाला क्षेत्र माना जाता है। यहाँ प्रतिवर्ष 1.5 लाख से अधिक पर्यटक आते हैं। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान बाघ संरक्षण की एक अत्यन्त सफल कहानी है जहाँ 2009 में बाघ-विहीन हो जाने के बाद पुनः बाघों की आबादी बसाई गई। वन्यजीव संसाधनों की दृष्टि से यह प्रदेश उच्च मूल्य श्रेणी में आता है, परन्तु पर्यटकों की बढ़ती संख्या से धारण क्षमता पर दबाव भी बढ़ रहा है।

4.1.2 जलीय संसाधन—जलप्रपात एवं नदियाँ

विन्ध्यन कगार प्रदेश में जलप्रपातों एवं नदियों की प्रचुरता है। इनका मूल्यांकन पर्यटन आकर्षण की दृष्टि से निम्नवत् है:

तालिका 2: विन्ध्यन कगार प्रदेश के प्रमुख जलीय पर्यटन संसाधनों का मूल्यांकन

जलप्रपात/नदी	स्थान	विशेषता	पर्यटन स्थिति	मूल्यांकन स्कोर (10 में से)
केवटी जलप्रपात	रीवा	ऊँचाई 98 मी., बीहड़ नदी	विकासशील	7
चचाई जलप्रपात	रीवा	ऊँचाई 130 मी., बीहड़ नदी	विकासशील	7.5
पूर्वा जलप्रपात	रीवा	टोंस नदी, सुन्दर घाटी	अल्पविकसित	6
रानेह जलप्रपात	पन्ना	केन नदी, रंगीन चट्टानें	विकसित	8.5
केन नदी	पन्ना-छतरपुर	बोटिंग, घड़ियाल दर्शन	विकासशील	7.5

सोन नदी	सीधी-शहडोल	उद्गम स्थल, सुरम्य घाटी	अल्पविकसित	5.5

जलप्रपातों एवं नदियों की दृष्टि से यह प्रदेश मध्य भारत में अग्रणी स्थान रखता है। चचाई एवं केवटी जलप्रपात भारत के सर्वाधिक ऊँचे जलप्रपातों में सम्मिलित हैं, परन्तु इन तक पहुँचने के मार्ग अभी भी दुर्गम हैं। रानेह जलप्रपात में ग्रेनाइट एवं क्वार्ट्ज़ाइट शिलाओं की विविधरंगी संरचना विश्व के दुर्लभ भूवैज्ञानिक आकर्षणों में से एक है।

4.1.3 वन एवं जैव विविधता संसाधन

विन्ध्यन कगार प्रदेश का कुल भौगोलिक क्षेत्र लगभग 40,000 वर्ग किलोमीटर है जिसमें से लगभग 35-40% क्षेत्र वनाच्छादित है। यहाँ के वनों में साल (Shorea robusta), सागौन (Tectona grandis), बाँस, महुआ, तेंदू, पलाश, आँवला, बेल जैसी असंख्य वनस्पति प्रजातियाँ पाई जाती हैं। औषधीय दृष्टि से यह वन क्षेत्र अत्यन्त मूल्यवान है क्योंकि यहाँ 200 से अधिक औषधीय पौधों की प्रजातियाँ उपलब्ध हैं।

पक्षी विविधता की दृष्टि से यह प्रदेश अत्यन्त समृद्ध है — यहाँ पक्षियों की 370 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें व्हाइट-रम्प्ड वल्चर, सारस क्रेन, इंडियन स्किमर जैसी संकटग्रस्त प्रजातियाँ भी सम्मिलित हैं। तितलियों की 150 से अधिक प्रजातियाँ एवं सरीसृपों की 80 से अधिक प्रजातियाँ इस क्षेत्र की जैव विविधता को असाधारण बनाती हैं।

4.2 ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संसाधनों का मूल्यांकन

4.2.1 ऐतिहासिक धरोहर स्थल

विन्ध्यन कगार प्रदेश की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक सम्पदा का मूल्यांकन निम्नांकित तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है:

तालिका 3: विन्ध्यन कगार प्रदेश के प्रमुख ऐतिहासिक संसाधनों का मूल्यांकन

धरोहर स्थल	स्थान	ऐतिहासिक काल	महत्व	पर्यटन मूल्य
खजुराहो मन्दिर समूह	छतरपुर	950-1050 ई.	UNESCO विश्व धरोहर	अत्यधिक उच्च
भरहुत स्तूप	सतना	ई. पू. 2री शताब्दी	बौद्ध पुरातात्त्विक स्थल	उच्च
कालिंजर किला	बाँदा (सीमावर्ती)	7वीं-16वीं शताब्दी	राष्ट्रीय महत्त्व	उच्च
बाँधवगढ़ किला	उमरिया	प्राचीन-मध्यकाल	राष्ट्रीय उद्यान में अवस्थित	उच्च
चित्रकूट	सतना	त्रेतायुग (रामायणकालीन)	धार्मिक-प्राकृतिक	उच्च
शैलचित्र स्थल	रीवा-सतना-पन्ना	मध्यपाषाण काल	पुरातात्त्विक	मध्यम

खजुराहो, जो इस प्रदेश का सबसे प्रसिद्ध पर्यटन गंतव्य है, प्रतिवर्ष 3-4 लाख से अधिक पर्यटकों को आकर्षित करता है जिनमें विदेशी पर्यटकों की संख्या उल्लेखनीय है। भरहुत का बौद्ध स्तूप सतना जिले में स्थित है, किन्तु यहाँ मूल मूर्तियाँ भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता एवं लखनऊ में स्थानान्तरित हो जाने के कारण पर्यटन की दृष्टि से यह स्थान अपनी पूरी क्षमता को व्यक्त नहीं कर पाता।

4.2.2 जनजातीय सांस्कृतिक संसाधन

विन्ध्यन कगार प्रदेश में निवास करने वाली जनजातियों की सांस्कृतिक विरासत पारिस्थितिकी पर्यटन का एक अत्यन्त मूल्यवान संसाधन है:

तालिका 4: विन्ध्यन कगार प्रदेश में जनजातीय सांस्कृतिक संसाधनों का मूल्यांकन

जनजाति	प्रमुख जिले	प्रमुख सांस्कृतिक विशेषता	पर्यटन क्षमता
बैगा	डिण्डोरी-शहडोल-मण्डला	गोदना कला, करमा नृत्य, वनौषधि ज्ञान	उच्च
गोंड	सतना-सीधी-शहडोल	गोंड चित्रकला, सैला नृत्य, देव-पूजा	उच्च
कोल	रीवा-सतना-सीधी	बाँस-शिल्प, लोकगीत, हाट संस्कृति	मध्यम
पनिका	रीवा-सतना	हस्तकरघा, परम्परागत बुनकरी	मध्यम
भील	पन्ना-दमोह	धनुर्विद्या, लोक नृत्य, जड़ी-बूटी	मध्यम

बैगा जनजाति की गोदना (Tattoo) कला एवं वनौषधि ज्ञान अत्यन्त दुर्लभ एवं पर्यटन की दृष्टि से विशिष्ट है। गोंड चित्रकला को भौगोलिक संकेत (GI Tag) प्राप्त है और यह अन्तर्राष्ट्रीय कला बाज़ारों में प्रसिद्ध है। इन सांस्कृतिक संसाधनों को यदि सुव्यवस्थित पर्यटन कार्यक्रमों में सम्मिलित किया जाये तो यह जनजातीय परिवारों की आजीविका का एक स्थायी माध्यम बन सकता है।

4.3 अधोसंरचनात्मक संसाधनों का मूल्यांकन

किसी भी पर्यटन क्षेत्र के विकास में अधोसंरचना की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। विन्ध्यन कगार प्रदेश की वर्तमान पर्यटन अधोसंरचना का मूल्यांकन नीचे की तालिका में किया गया है:

तालिका 5: विन्ध्यन कगार प्रदेश की पर्यटन अधोसंरचना का मूल्यांकन

अधोसंरचना घटक	वर्तमान स्थिति	मूल्यांकन (5 में से)	सुधार की आवश्यकता

सड़क सम्पर्क	राज्य मार्ग उपलब्ध, ग्रामीण सड़कें दुर्बल	2.5	अत्यधिक
रेल सम्पर्क	सीमित — रीवा, सतना, कटनी, पन्ना	2.5	अत्यधिक
वायु सम्पर्क	खजुराहो हवाई अड्डा (एकमात्र)	1.5	अत्यधिक
आवास सुविधा	प्रमुख स्थलों पर सीमित होटल/रिसॉर्ट	3.0	अधिक
पेयजल एवं स्वच्छता	पर्यटन स्थलों पर अपर्याप्त	2.0	अत्यधिक
डिजिटल संचार	नेटवर्क असंगत, वनक्षेत्र में नगण्य	2.0	अत्यधिक
पर्यटक सूचना केन्द्र	केवल प्रमुख स्थलों पर	2.5	अत्यधिक
प्रशिक्षित गाइड	अत्यन्त सीमित, भाषा-कौशल न्यून	2.0	अत्यधिक

अधोसंरचना के मूल्यांकन से यह स्पष्ट होता है कि यह प्रदेश इस दृष्टि से अत्यन्त कमज़ोर है। वायु एवं रेल सम्पर्क की अपर्याप्तता के कारण यहाँ विदेशी एवं दूरवर्ती पर्यटकों का आगमन सीमित रहता है। ग्रामीण एवं वनक्षेत्रों में पर्यटन स्थलों तक पहुँच के लिए कच्ची सड़कें एक बड़ी बाधा हैं। इको-फ्रेंडली आवास की भी अत्यधिक कमी है।

4.4 धारण क्षमता (Carrying Capacity) का मूल्यांकन

पारिस्थितिकी पर्यटन संसाधनों के संरक्षण के लिए धारण क्षमता का निर्धारण एवं मूल्यांकन आवश्यक है। धारण क्षमता से आशय उस अधिकतम पर्यटक संख्या से है जो किसी स्थल पर एक निश्चित समय में पर्यावरणीय, सामाजिक एवं प्रबन्धकीय मानकों को क्षति पहुँचाये बिना भ्रमण कर सकती है।

तालिका 6: प्रमुख पर्यटन स्थलों की धारण क्षमता एवं पर्यटन दबाव का मूल्यांकन

पर्यटन स्थल	अनुमानित वार्षिक पर्यटक	धारण क्षमता	दबाव स्तर	संरक्षण प्राथमिकता
बाँधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान	1,50,000+	मध्यम-उच्च	अधिक	अत्यधिक उच्च
खजुराहो	3,50,000+	उच्च	अत्यधिक	उच्च
पन्ना राष्ट्रीय उद्यान	50,000-60,000	मध्यम	सामान्य	उच्च
चित्रकूट	5,00,000+ (धार्मिक)	सीमित	अत्यधिक	उच्च
रानेह जलप्रपात	20,000-30,000	सीमित	सामान्य	मध्यम
केवटी-चचाई जलप्रपात	10,000-15,000	निम्न	न्यून	मध्यम

खजुराहो एवं चित्रकूट में पर्यटन दबाव अत्यधिक है। चित्रकूट में मुख्यतः धार्मिक पर्यटन के कारण त्योहारों के अवसर पर अत्यधिक भीड़ होती है जिससे नदी एवं वन परिवेश पर दुष्प्रभाव पड़ता है। बाँधवगढ़ में बाघ-क्षेत्र के आस-पास वाहनों की अधिक संख्या वन्यजीव व्यवहार को प्रभावित कर रही है।

4.5 समग्र संसाधन मूल्यांकन सूचकांक

विन्ध्यन कगार प्रदेश के विभिन्न पर्यटन स्थलों का समग्र मूल्यांकन पाँच प्रमुख मानदण्डों — प्राकृतिक संसाधन, सांस्कृतिक महत्व, अधोसंरचना, सुलभता एवं संरक्षण स्तर — के आधार पर निम्नवत् प्रस्तुत है:

तालिका 7: विन्ध्यन कगार प्रदेश — समग्र पारिस्थितिकी पर्यटन संसाधन मूल्यांकन सूचकांक

पर्यटन स्थल	प्राकृतिक संसाधन (20)	सांस्कृतिक महत्व (20)	अधोसंरचना (20)	सुलभता (20)	संरक्षण (20)	कुल (100)
खजुराहो	12	20	15	16	14	77

बाँधवगढ़	20	10	13	14	14	71
चित्रकूट	15	18	11	14	11	69
पन्ना उद्यान	18	10	11	12	15	66
रानेह जलप्रपात	16	8	9	12	13	58
केवटी जलप्रपात	16	6	7	9	12	50
जनजातीय क्षेत्र	12	18	5	7	10	52

समग्र मूल्यांकन सूचकांक से स्पष्ट होता है कि खजुराहो (77/100) एवं बाँधवगढ़ (71/100) उच्च मूल्य श्रेणी में हैं, जबकि चित्रकूट एवं पन्ना उद्यान मध्यम-उच्च श्रेणी में आते हैं। जलप्रपात स्थल एवं जनजातीय क्षेत्र अधोसंरचना की कमज़ोरी के कारण निम्न स्कोर पाते हैं, जबकि प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से इनका मूल्य अत्यधिक है।

5. संसाधन मूल्यांकन में उभरी चुनौतियाँ

शोध प्रक्रिया के दौरान निम्नलिखित प्रमुख चुनौतियाँ सामने आईं जो इस प्रदेश के पारिस्थितिकी पर्यटन विकास में बाधक हैं:

1. अधोसंरचना की कमज़ोरी: पर्यटन स्थलों तक सड़क, रेल एवं वायु सम्पर्क का अभाव सबसे बड़ी बाधा है।
2. अनियन्त्रित पर्यटन दबाव: खजुराहो एवं चित्रकूट जैसे स्थलों पर धारण क्षमता से अधिक पर्यटक आने से पर्यावरणीय क्षति हो रही है।
3. स्थानीय समुदायों की सीमित भागीदारी: पर्यटन से होने वाले लाभ स्थानीय जनजातीय समुदायों तक नहीं पहुँच रहे हैं।
4. वन विनाश एवं खनन: कुछ क्षेत्रों में वन कटान एवं रेत-पत्थर खनन से पर्यटन संसाधनों को क्षति हो रही है।

5. जागरूकता एवं प्रशिक्षण का अभाव: स्थानीय स्तर पर पर्यटन प्रबन्धन के लिए प्रशिक्षित मानव संसाधन का घोर अभाव है।

6. डिजिटल प्रचार-प्रसार की कमी: अनेक महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल अभी भी डिजिटल मानचित्र पर नहीं हैं।

6. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र में विन्ध्यन कगार प्रदेश के पारिस्थितिकी पर्यटन संसाधनों का भौगोलिक दृष्टिकोण से व्यापक मूल्यांकन किया गया है। शोध के निष्कर्षों को निम्न रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है:

प्रथम, इस प्रदेश में पारिस्थितिकी पर्यटन संसाधनों की गुणवत्ता एवं विविधता अत्यन्त उच्च है। बाँधवगढ़ जैसा वन्यजीव क्षेत्र, रानेह एवं केवटी जैसे दुर्लभ जलप्रपात, खजुराहो जैसी UNESCO विश्व धरोहर, एवं बैगा-गोंड जैसी दुर्लभ जनजातीय संस्कृतियाँ इस प्रदेश को भारत में पारिस्थितिकी पर्यटन के लिए अत्यन्त समृद्ध बनाती हैं।

द्वितीय, अधोसंरचना एवं सुलभता के मानदण्डों पर यह प्रदेश अत्यन्त कमज़ोर है। यही सबसे बड़ा कारण है कि प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संसाधनों की प्रचुरता के बावजूद यह प्रदेश पर्यटन के क्षेत्र में अपनी पूरी सम्भावना को साकार नहीं कर पाया है।

तृतीय, धारण क्षमता के मूल्यांकन से यह स्पष्ट होता है कि कुछ प्रमुख स्थलों पर अनियन्त्रित पर्यटन से पर्यावरणीय क्षति हो रही है, जबकि अनेक संसाधन-समृद्ध स्थल अल्पज्ञात एवं अविकसित हैं।

चतुर्थ, जनजातीय सांस्कृतिक संसाधन पर्यटन मूल्य के दृष्टिकोण से अत्यन्त उच्च हैं, परन्तु इनका समुचित दस्तावेज़ीकरण एवं पर्यटन से जुड़ाव अभी प्रारम्भिक अवस्था में है। इन संसाधनों का संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार तत्काल आवश्यक है।

संक्षेप में, विन्ध्यन कगार प्रदेश एक 'Hidden Gem' की स्थिति में है — जिसमें असाधारण संसाधन हैं, परन्तु उचित प्रबन्धन एवं विकास की प्रतीक्षा है। यदि इस प्रदेश के पारिस्थितिकी पर्यटन संसाधनों का सुव्यवस्थित एवं सतत् रूप से विकास किया जाये, तो यह प्रदेश मध्य भारत का प्रमुख पारिस्थितिकी पर्यटन गंतव्य बन सकता है।

7. सुझाव

शोध के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये जाते हैं:

1. संसाधन अनुकूलन नीति: समग्र मूल्यांकन सूचकांक के आधार पर प्रत्येक पर्यटन स्थल के लिए पृथक् विकास योजना बनाई जाये। उच्च संसाधन, निम्न अधोसंरचना वाले स्थलों को प्राथमिकता दी जाये।

2. धारण क्षमता प्रबन्धन: बाँधवगढ़, खजुराहो एवं चित्रकूट में वैज्ञानिक धारण क्षमता का निर्धारण करके पर्यटकों की संख्या का नियन्त्रण किया जाये।

3. अधोसंरचना विकास: पर्यटन स्थलों को राष्ट्रीय राजमार्ग एवं रेल नेटवर्क से जोड़ा जाये। खजुराहो के अतिरिक्त रीवा एवं सतना में हवाई सेवा का विस्तार किया जाये।

4. जनजातीय संसाधन संरक्षण: जनजातीय कलाओं, वनौषधि ज्ञान एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का व्यापक दस्तावेज़ीकरण किया जाये एवं इन्हें पर्यटन उत्पाद के रूप में विकसित किया जाये।

5. इको-फ्रेंडली आवास: वन क्षेत्रों के समीप सोलर-ऊर्जा चालित इको-रिसॉर्ट एवं होमस्टे विकसित किये जायें जो स्थानीय परिवारों द्वारा संचालित हों।

6. डिजिटल एटलस: विन्ध्यन कगार प्रदेश के समस्त पारिस्थितिकी पर्यटन संसाधनों का GIS आधारित डिजिटल एटलस तैयार किया जाये जो पर्यटकों के लिए मोबाइल ऐप के रूप में उपलब्ध हो।

7. पर्यटन-पर्यावरण निगरानी: एक स्वतन्त्र पर्यावरण निगरानी समिति गठित की जाये जो नियमित रूप से संसाधनों पर पर्यटन के प्रभाव का मूल्यांकन करे एवं सुधारात्मक सुझाव दे।

8. क्षेत्रीय पर्यटन सर्किट: बाँधवगढ़-पन्ना-खजुराहो-चित्रकूट एवं जनजातीय क्षेत्रों को मिलाकर एक 'विन्ध्य इको-सर्किट' विकसित किया जाये जो पर्यटकों को विविध अनुभव प्रदान करे।

संदर्भ ग्रन्थ

1. अग्रवाल, एस. के. (2008). पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी पर्यटन. रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
2. आर्य, एस. एस. एवं शर्मा, आर. के. (2012). मध्य प्रदेश का भूगोल. मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।

3. उपाध्याय, विनय कुमार (2016). विन्ध्याचल: इतिहास, पुरातत्त्व एवं पर्यटन. विद्यापीठ प्रकाशन, वाराणसी।
4. कुमार, राजेश एवं गुप्ता, सुमन (2020). भारत में पारिस्थितिकी पर्यटन संसाधनों का मूल्यांकन: एक समीक्षा. भूगोल पत्रिका, 48(2), 112-128।
5. गुप्ता, महेश चन्द्र (2014). बाघेलखण्ड का इतिहास एवं संस्कृति. सेण्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद।
6. चौरसिया, रमाशंकर (2019). पन्ना राष्ट्रीय उद्यान: बाघ संरक्षण एवं पर्यटन. वन एवं पर्यावरण शोध पत्रिका, 12(1), 45-62।
7. तिवारी, रमाकान्त (2011). विन्ध्य क्षेत्र की लोक संस्कृति एवं पर्यटन सम्भावनाएँ. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली।
8. त्रिपाठी, पी. के. एवं मिश्र, एस. (2017). मध्यप्रदेश में पर्यटन संसाधनों का भौगोलिक मूल्यांकन. भौगोलिक समीक्षा, 33(4), 78-95।
9. मिश्र, गिरिजाशंकर (2009). विन्ध्य प्रदेश: भौगोलिक परिदृश्य एवं संसाधन. आलोक प्रकाशन, लखनऊ।
10. शर्मा, हरिनाथ (2015). मध्यप्रदेश के वन एवं वन्यजीव संसाधन. मध्यप्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड, भोपाल।
11. शुक्ला, अनिल कुमार (2021). विन्ध्यन कगार प्रदेश में जैव विविधता एवं पर्यटन. पर्यावरण एवं भूगोल शोध पत्रिका, 9(3), 34-52।
12. सिंह, राम नरेश (2018). खजुराहो: विश्व धरोहर एवं पर्यटन संसाधन मूल्यांकन. सांस्कृतिक पर्यटन शोध पत्रिका, 6(2), 19-38।
13. यादव, रमेश प्रसाद (2022). बाघेलखण्ड में जनजातीय पर्यटन: सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ. जनजाति शोध पत्रिका, 14(1), 88-107।
14. मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग (2023). मध्यप्रदेश पर्यटन वार्षिक प्रतिवेदन 2022-23. पर्यटन विभाग, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल।
15. मध्यप्रदेश वन विभाग (2022). मध्यप्रदेश वन स्थिति प्रतिवेदन 2022. वन विभाग, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल।

16. भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय (2023). भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2023. भारतीय वन सर्वेक्षण, देहरादून।
17. राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (2022). बाघ गणना रिपोर्ट 2022. NTCA, नई दिल्ली।
18. www.mptourism.com — मध्यप्रदेश पर्यटन विकास निगम (सन्दर्भ तिथि: 10 अप्रैल 2024)।
19. www.forest.mp.gov.in — मध्यप्रदेश वन विभाग (सन्दर्भ तिथि: 15 अप्रैल 2024)।
20. www.bandhavgarh.com — बाँधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान (सन्दर्भ तिथि: 18 अप्रैल 2024)।
21. www.panthernationalpark.in — पन्ना राष्ट्रीय उद्यान (सन्दर्भ तिथि: 20 अप्रैल 2024)।
22. www.incredibleindia.org — भारत पर्यटन (सन्दर्भ तिथि: 22 अप्रैल 2024)।